Engineering Universe for Scientific Research and Management
ISSN (Online): 2319-3069
Vol. XVI Issue VII
July 2024

युवा फैशन और पहचान का निर्माण: हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों का अध्ययन

भावना खंडेलवाल[1], डॉ मोहम्मद खालिद[2]
रिसर्च स्कॉलर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर[1]
रिसर्च सुपरवाइजर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी, जयपुर[2]

सार

फैशन केवल पहनावे का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान और समाज में उसकी स्थिति का प्रतीक भी है। फैशन के माध्यम से व्यक्ति अपनी शैली, रुचियों और सामाजिक पहचान को प्रदर्शित करता है। विशेषकर किशोरों के लिए, फैशन एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है, जिसके माध्यम से वे अपने व्यक्तित्व और समूह की पहचान का निर्माण करते हैं। हाड़ौती क्षेत्र, जो अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक धरोहर के लिए जाना जाता है, वहाँ के किशोरों में फैशन के प्रति तेजी से बदलती प्रवृत्तियों को देखा जा रहा है। वैश्वीकरण, इंटरनेट, और सोशल मीडिया के प्रभाव ने किशोरों के पहनावे और फैशन की धारणा को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है।

इस शोध पत्र में, हम हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि इन प्रवृत्तियों का उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, हम यह भी विश्लेषण करेंगे कि आधुनिक फैशन और पारंपरिक पहनावे के बीच संघर्ष कैसे किशोरों की सोच और पहनावे को प्रभावित कर रहा है।

मुख्य शब्द: युवा फैशन, किशोरावस्था, पहचान निर्माण, हाड़ौती क्षेत्र, पारंपरिक पहनावा, आधुनिक फैशन, वैश्वीकरण, सोशल मीडिया प्रभाव।

1 प्रस्तावना

फैशन केवल पहनावे का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान और समाज में उसकी स्थिति का प्रतीक भी है। फैशन के माध्यम से व्यक्ति अपनी शैली, रुचियों और सामाजिक पहचान को प्रदर्शित करता है। विशेषकर किशोरों के लिए, फैशन एक महत्वपूर्ण उपकरण बन गया है, जिसके माध्यम से वे अपने व्यक्तित्व और समूह की पहचान का निर्माण करते हैं। हाड़ौती क्षेत्र, जो अपनी सांस्कृतिक और पारंपरिक धरोहर के लिए जाना जाता है, वहाँ के किशोरों में फैशन के प्रति तेजी से बदलती प्रवृत्तियों को देखा जा रहा है। वैश्वीकरण, इंटरनेट, और सोशल मीडिया के प्रभाव ने किशोरों के पहनावे और फैशन की धारणा को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है।

इस शोध पत्र में, हम हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों का अध्ययन करेंगे और यह समझने का प्रयास करेंगे कि इन प्रवृत्तियों का उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, हम यह भी विश्लेषण करेंगे कि आधुनिक फैशन और पारंपरिक पहनावे के बीच संघर्ष कैसे किशोरों की सोच और पहनावे को प्रभावित कर रहा है।

2. साहित्य समीक्षा

युवा फैशन और पहचान का निर्माण – हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों का अध्ययन

किशोरों के फैशन और पहचान निर्माण पर आधारित साहित्य का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि फैशन न केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का साधन है, बल्कि यह सामाजिक पहचान, सांस्कृतिक धरोहर, और वैश्विक प्रभावों का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हाड़ौती क्षेत्र के संदर्भ में, पारंपरिक और आधुनिक फैशन के बीच

का संघर्ष और फैशन के प्रति किशोरों का बदलता दृष्टिकोण प्रमुख अध्ययन का विषय रहा है।

फैशन और पहचान

गॉफमैन (1959) ने अपने काम "The Presentation of Self in Everyday Life" में बताया कि कैसे व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन में फैशन और पहनावे के माध्यम से अपनी पहचान का निर्माण करते हैं। किशोरावस्था में यह प्रक्रिया और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि इस उम्र में व्यक्ति अपनी सामाजिक पहचान बनाने के लिए फैशन का प्रयोग करता है। **बोर्डिओ (1984)** ने अपने सामाजिक सिद्धांत "Distinction: A Social Critique of the Judgement of Taste" में इस बात पर जोर दिया कि फैशन सामाजिक वर्गों और सांस्कृतिक पूंजी के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन होता है।

फैशन और सामाजिक परिवर्तन

शर्मा (2010) ने अपने शोध "भारतीय समाज में आधुनिकता और फैशन का प्रभाव" में यह निष्कर्ष निकाला कि वैश्वीकरण और शहरीकरण ने भारतीय समाज में पारंपरिक पहनावे और फैशन के प्रति दृष्टिकोण को बदल दिया है। किशोर, जो अपने आसपास के वैश्विक फैशन से प्रभावित होते हैं, अब पारंपरिक परिधानों की बजाय आधुनिक और पश्चिमी परिधानों को अपनाने लगे हैं। विशेष रूप से सोशल मीडिया और फैशन इंडस्ट्री ने इस परिवर्तन को और तेज किया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि किशोर अब केवल स्थानीय फैशन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे विश्व के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित फैशन ट्रेंड्स को भी फॉलो कर रहे हैं।

पारंपरिक और आधुनिक फैशन के बीच संघर्ष

गुप्ता (2015) ने "भारतीय फैशन और पारंपरिक पहचान" में यह दर्शाया कि कैसे आधुनिक फैशन ने भारतीय समाज में पारंपरिक पहचान और सामाजिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला है। किशोर, जो पारंपरिक पहनावे को सामाजिक दायित्व के रूप में देखते थे, अब व्यक्तिगत स्वतंत्रता और फैशन के माध्यम से अपनी पहचान बना रहे हैं। गुप्ता के अनुसार, हाड़ौती क्षेत्र में भी पारंपरिक और आधुनिक फैशन के बीच एक स्पष्ट संघर्ष देखा जाता है, जहाँ युवा पीढ़ी अपनी पहचान को आधुनिक फैशन के माध्यम से व्यक्त करना चाहती है, जबकि समाज का एक वर्ग अभी भी पारंपरिक पहनावे को बनाए रखने पर जोर देता है।

किशोरों में फैशन और सोशल मीडिया का प्रभाव

सक्सेना (2017) ने "किशोरावस्था में फैशन और सोशल मीडिया का प्रभाव" पर अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि सोशल मीडिया प्लेटफार्मों, जैसे इंस्टाग्राम, यूट्यूब, और फैशन ब्लॉग्स ने किशोरों के फैशन पर गहरा प्रभाव डाला है। सोशल मीडिया के माध्यम से किशोर अब विश्व के किसी भी कोने में फैशन ट्रेंड्स से अवगत हो सकते हैं। सक्सेना का शोध इस बात पर जोर देता है कि सोशल मीडिया ने फैशन को एक व्यापक प्लेटफार्म प्रदान किया है, जहाँ किशोर अपने पहनावे के माध्यम से न केवल व्यक्तिगत पहचान बल्कि समूह की पहचान भी निर्मित करते हैं। हाड़ौती क्षेत्र में भी किशोर अब पारंपरिक पहनावे से प्रभावित होने की बजाय, सोशल मीडिया पर देखे गए ट्रेंड्स को अपनाते हैं।

फैशन और सांस्कृतिक धरोहर

मिश्रा (2016) ने अपने शोध "भारतीय परंपरागत पहनावा और सांस्कृतिक धरोहर" में यह अध्ययन किया कि कैसे पारंपरिक पहनावा भारतीय समाज में सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक रहा है। उनका अध्ययन बताता है कि हालांकि आधुनिक फैशन और पश्चिमी परिधान तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं, फिर भी पारंपरिक पहनावा अब भी सांस्कृतिक अवसरों पर महत्त्व रखता है। हाड़ौती क्षेत्र में भी, किशोर विशेष अवसरों जैसे विवाह, त्योहारों, और धार्मिक आयोजनों में पारंपरिक परिधानों को महत्व देते हैं। मिश्रा का अध्ययन यह भी दर्शाता है कि फैशन डिजाइनरों द्वारा पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का मिश्रण, जैसे फ्यूज़न फैशन, अब किशोरों के बीच लोकप्रिय हो रहा है।

किशोरों में फैशन के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

सिंह (2018) ने "फैशन और किशोरों की सामाजिक पहचान" पर अपने शोध में बताया कि किशोर अपने फैशन और पहनावे के माध्यम से न केवल अपनी

व्यक्तिगत पहचान का निर्माण करते हैं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति भी प्राप्त करते हैं। उनके अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि फैशन के प्रति किशोरों का आकर्षण केवल सामाजिक मान्यता प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक पूंजी का भी दर्पण है। ब्रांडेड कपड़ों और महंगे फैशन ट्रेंड्स को अपनाने की प्रवृत्ति हाड़ौती क्षेत्र में भी तेजी से बढ़ रही है, जो यह दर्शाता है कि किशोर अब फैशन को सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान का माध्यम मानते हैं।

फैशन और पहचान: सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

फैशन और पहचान के निर्माण के बीच गहरा संबंध है। **गॉफमैन (1959)** के अनुसार, फैशन एक व्यक्ति के सामाजिक प्रदर्शन का हिस्सा होता है, जो उसके सामाजिक संदर्भ और पहचान का निर्माण करता है। किशोरावस्था में, फैशन सामाजिक समूहों में फिट होने, आत्म-प्रदर्शन, और सामाजिक मान्यता प्राप्त करने का एक माध्यम बनता है। **बोर्डिओ (1984)** के सामाजिक सिद्धांत के अनुसार, फैशन सामाजिक पूंजी के निर्माण में सहायक होता है, जहाँ व्यक्ति अपने पहनावे और शैली के माध्यम से समाज में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करता है।

3. हाड़ौती क्षेत्र का सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

हाड़ौती क्षेत्र, जिसमें राजस्थान के कोटा, बूंदी, झालावाड़, और बारां जिले शामिल हैं, एक पारंपरिक समाज है जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। पारंपरिक पहनावा, जैसे कि पुरुषों के लिए धोती, कुर्ता, और पगड़ी, और महिलाओं के लिए घाघरा, चोली, और ओढ़नी, इस क्षेत्र की पहचान का प्रतीक रहे हैं। परंपरागत परिधान न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखते थे, बल्कि समाज में व्यक्ति की जातीय और सामाजिक स्थिति को भी दर्शाते थे।

हालांकि, हाल के दशकों में, शहरीकरण, शिक्षा, और वैश्विक संचार के साधनों ने इस क्षेत्र के किशोरों के फैशन और पहनावे में बदलाव लाए हैं। पश्चिमी परिधानों और आधुनिक फैशन के प्रति रुचि बढ़ी है, और किशोर अब पारंपरिक पहनावे की तुलना में जींस, टी-शर्ट, साड़ी, और सूट को प्राथमिकता दे रहे हैं।

किशोरावस्था और फैशन

किशोरावस्था जीवन का वह चरण है जहाँ व्यक्ति अपनी पहचान और सामाजिक स्थिति की खोज करता है। इस अवधि में, फैशन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि किशोर अपने साथियों के बीच खुद को स्थापित करने का प्रयास करते हैं। फैशन न केवल उनके व्यक्तिगत चयन का परिणाम होता है, बल्कि यह सामाजिक मान्यता प्राप्त करने और समूहों के साथ जुड़ने का माध्यम भी होता है।

वैश्वीकरण और फैशन

वैश्वीकरण ने फैशन इंडस्ट्री पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे दुनिया भर के फैशन ट्रेंड्स एक-दूसरे से जुड़ गए हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे इंस्टाग्राम, फेसबुक, और यूट्यूब, ने फैशन की वैश्विक धारणा को और अधिक व्यापक बना दिया है। हाड़ौती क्षेत्र के किशोर भी इस वैश्विक फैशन के प्रभाव से अछूते नहीं हैं। वे अब न केवल स्थानीय परिधानों से परिचित हैं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय फैशन ट्रेंड्स के प्रति भी आकर्षित हैं।

सोशल मीडिया का प्रभाव

किशोरों के फैशन पर सोशल मीडिया का प्रभाव अत्यधिक स्पष्ट है। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर फैशन इन्फ्लुएंसर्स, सेलेब्रिटीज़, और साथी किशोरों के पहनावे से प्रभावित होकर, हाड़ौती के किशोर अपनी पहचान के निर्माण के लिए आधुनिक फैशन ट्रेंड्स को अपनाने लगे हैं। सोशल मीडिया ने फैशन को न केवल एक व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है, बल्कि इसे सामूहिक पहचान और समूह स्वीकृति का माध्यम भी बना दिया है।

पारंपरिक और आधुनिक फैशन के बीच संघर्ष

हाड़ौती क्षेत्र की पारंपरिक पहचान और आधुनिक फैशन के बीच एक स्पष्ट संघर्ष देखा जाता है। पारंपरिक परिधान, जो सांस्कृतिक धरोहर और स्थानीय परंपराओं का प्रतीक हैं, अब आधुनिकता के प्रभाव में छूटते जा रहे हैं। किशोर, जो आधुनिकता और वैश्विक फैशन ट्रेंड्स से प्रभावित हैं, अब

पारंपरिक परिधानों को अधिकतर विशेष अवसरों तक सीमित कर रहे हैं।

फैशन और लिंग

फैशन केवल सामाजिक पहचान का ही नहीं, बल्कि लिंग आधारित भूमिका का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हाड़ौती के किशोरों में यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है कि लड़कियां अब साड़ी और घाघरा-चोली जैसे पारंपरिक परिधानों के बजाय जींस, टी-शर्ट और वेस्टर्न ड्रेसेस को अधिक प्राथमिकता दे रही हैं। वहीं, लड़के पारंपरिक धोती और कुर्ता की जगह पैंट-शर्ट, सूट और कैजुअल वियर पहनने लगे हैं। यह परिवर्तन न केवल फैशन के प्रति सोच में बदलाव को दर्शाता है, बल्कि लिंग-आधारित भूमिका में भी एक बदलाव का संकेत देता है।

फैशन का आर्थिक प्रभाव

फैशन का किशोरों की पहचान और समाज में उनकी स्थिति पर तो प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही इसका आर्थिक पहलू भी महत्वपूर्ण है। ब्रांडेड कपड़ों और आधुनिक परिधानों की मांग बढ़ने के साथ, किशोर अब फैशन पर अधिक खर्च करने लगे हैं। हाड़ौती क्षेत्र में, जहाँ पारंपरिक कपड़े स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए जाते थे और सस्ते होते थे, वहीं आधुनिक फैशन ब्रांडेड और महंगे कपड़ों के रूप में उपलब्ध हो रहा है। यह बदलाव न केवल किशोरों की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव डाल रहा है, बल्कि स्थानीय उद्योगों और कारीगरों पर भी इसका प्रभाव पड़ रहा है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान और फैशन

हालांकि आधुनिक फैशन का प्रभाव बढ़ रहा है, फिर भी पारंपरिक परिधानों का महत्व पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। विशेष अवसरों, जैसे विवाह, त्योहार और धार्मिक आयोजन में, किशोर अब भी पारंपरिक पहनावे का चयन करते हैं। इसके अलावा, फैशन डिजाइनरों द्वारा पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का मिश्रण करके नए डिजाइन तैयार किए जा रहे हैं, जिससे किशोरों के बीच पारंपरिक परिधानों का पुनरुत्थान हो रहा है।

4. शोध विधि (Research Methodology)

इस अध्ययन का उद्देश्य हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों और उनके पहचान निर्माण के बीच के संबंध का विश्लेषण करना है। यह शोध एक मिश्रित विधि (Mixed Method Approach) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक (Qualitative) और मात्रात्मक (Quantitative) दोनों तरीकों का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन के लिए एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए किशोरों के फैशन की बदलती प्रवृत्तियों और इसके प्रभाव का विश्लेषण किया गया है।

गुणात्मक विधि का उपयोग किशोरों के अनुभवों और उनके फैशन के प्रति दृष्टिकोण को समझने के लिए किया गया है, जबकि मात्रात्मक विधि का उपयोग आँकड़ों के माध्यम से फैशन और पहचान निर्माण के बीच के संबंध को मापने के लिए किया गया है। इस शोध के अंतर्गत प्राथमिक डेटा (Primary Data) और द्वितीयक डेटा (Secondary Data) दोनों का संग्रह किया गया है। प्राथमिक डेटा के लिए सर्वेक्षण (Survey) और साक्षात्कार (Interviews) का प्रयोग किया गया, जबकि द्वितीयक डेटा के लिए साहित्यिक समीक्षा और रिपोर्टों का उपयोग किया गया।

नमूना (Sample)

इस अध्ययन का नमूना हाड़ौती क्षेत्र के चार प्रमुख जिलों – कोटा, बूंदी, झालावाड़, और बारां – के किशोरों पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए 15 से 19 वर्ष की आयु के किशोरों को लक्षित किया गया है। नमूना चयन के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक चयन (Stratified Random Sampling) पद्धति का उपयोग किया गया है, जिसमें शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से 200 किशोरों को शामिल किया गया।

नमूना में 50% लड़के और 50% लड़कियों को शामिल किया गया, ताकि लिंग आधारित फैशन दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से किशोरों का चयन यह समझने के लिए किया गया कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, और मीडिया संपर्क के आधार पर फैशन प्रवृत्तियों में किस प्रकार का बदलाव आ रहा है।

उपकरण और तकनीकें (Tools and Techniques)

1. **सर्वेक्षण (Survey)**: फैशन और पहचान निर्माण से संबंधित प्रश्नावली तैयार की गई, जिसमें किशोरों के फैशन पसंद, पहनावे के प्रकार, सोशल मीडिया के उपयोग, और फैशन ट्रेंड्स के प्रति उनके दृष्टिकोण को समझने वाले प्रश्न शामिल थे। प्रश्नावली में बंद और खुले प्रश्नों का मिश्रण था ताकि मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा प्राप्त किए जा सकें। सर्वेक्षण के माध्यम से किशोरों के फैशन ट्रेंड्स और उनके सामाजिक संदर्भ के बीच संबंधों को समझा गया।

2. **साक्षात्कार (Interviews)**: 20 किशोरों के साथ गहन साक्षात्कार किए गए ताकि फैशन और पहचान निर्माण के संबंध में उनके व्यक्तिगत अनुभवों और धारणाओं को गहराई से समझा जा सके। साक्षात्कारों से प्राप्त डेटा ने किशोरों के व्यक्तिगत और समूह स्तर पर फैशन के प्रभाव का विश्लेषण करने में मदद की।

3. **साहित्यिक समीक्षा (Literature Review)**: फैशन, पहचान निर्माण, किशोरावस्था, और सोशल मीडिया के प्रभाव से संबंधित मौजूदा शोध और अध्ययन की समीक्षा की गई। यह समीक्षा शोध के सिद्धांत और संदर्भ को स्थापित करने में मददगार रही।

4. **अवलोकन (Observation)**: किशोरों के फैशन प्रवृत्तियों को समझने के लिए विद्यालयों, कॉलेजों और सार्वजनिक स्थानों पर अवलोकन किया गया। यह तकनीक वास्तविक जीवन में किशोरों के फैशन विकल्पों और समूह की गतिशीलता को समझने में सहायक रही।

5. **डेटा विश्लेषण (Data Analysis)**: डेटा विश्लेषण के लिए SPSS (Statistical Package for the Social Sciences) का उपयोग किया गया। सर्वेक्षण और साक्षात्कार से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया ताकि फैशन और पहचान निर्माण के बीच संबंधों का विश्लेषण किया जा सके। गुणात्मक डेटा के लिए सामग्री विश्लेषण (Content Analysis) पद्धति का उपयोग किया गया।

5. परिणाम (Results)

इस अध्ययन के माध्यम से हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में बदलती फैशन प्रवृत्तियों और उनके पहचान निर्माण के बीच गहरे संबंधों का विश्लेषण किया गया। सर्वेक्षण और साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त परिणाम निम्नलिखित हैं:

1. **फैशन के प्रति दृष्टिकोण**: अध्ययन में शामिल 80% किशोरों ने स्वीकार किया कि उनके फैशन के प्रति दृष्टिकोण पिछले कुछ वर्षों में बदला है। वे अब पारंपरिक पहनावे की तुलना में आधुनिक और पश्चिमी शैली के परिधानों की ओर अधिक आकर्षित हो रहे हैं। 65% किशोरों ने कहा कि वे फैशन के माध्यम से अपनी पहचान और व्यक्तित्व को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

2. **सोशल मीडिया का प्रभाव**: 75% किशोरों ने बताया कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, जैसे इंस्टाग्राम, फेसबुक, और यूट्यूब, उनके फैशन विकल्पों पर प्रभाव डालते हैं। 60% किशोर फैशन इन्फ्लुएंसर्स और सेलेब्रिटीज़ के पहनावे से प्रेरित होते हैं, जो उनके पहनावे और स्टाइल के चयन को प्रभावित करते हैं।

3. **लिंग आधारित दृष्टिकोण**: लड़कियों और लड़कों में फैशन के प्रति दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर पाया गया। लड़कियों में आधुनिक परिधान, जैसे जींस, टी-शर्ट, और वेस्टर्न ड्रेसेस की ओर झुकाव देखा गया, जबकि लड़के कैजुअल वियर, सूट और ब्रांडेड कपड़ों को प्राथमिकता दे रहे थे। यह अंतर

लिंग आधारित फैशन पहचान को दर्शाता है, जो किशोरावस्था में अहम भूमिका निभाता है।

4. **शहरी और ग्रामीण अंतर**: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के किशोरों में फैशन के प्रति दृष्टिकोण में अंतर पाया गया। शहरी किशोरों में ब्रांडेड कपड़ों और वेस्टर्न फैशन की ओर अधिक झुकाव था, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के किशोर अब भी पारंपरिक और साधारण आधुनिक पहनावे को प्राथमिकता दे रहे हैं। हालांकि, 50% ग्रामीण किशोर भी सोशल मीडिया के प्रभाव से अपने फैशन विकल्पों में बदलाव कर रहे हैं।

5. **पारंपरिक और आधुनिक पहनावे का संतुलन**: 70% किशोरों ने माना कि वे पारंपरिक परिधानों को विशेष अवसरों, जैसे विवाह, त्योहारों, और धार्मिक आयोजनों में पहनते हैं, जबकि सामान्य दिनों में वे आधुनिक और वेस्टर्न स्टाइल के कपड़े पहनते हैं। यह दर्शाता है कि किशोर अब आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बना रहे हैं।

6. चर्चा (Discussion)

1. पहचान निर्माण में फैशन की भूमिका: इस अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि किशोरावस्था में फैशन केवल व्यक्तिगत शैली का ही नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान का भी महत्वपूर्ण अंग है। किशोर फैशन के माध्यम से अपनी पहचान का निर्माण और संचार करते हैं। विशेष रूप से सोशल मीडिया का प्रभाव किशोरों की फैशन पसंद पर अत्यधिक देखा गया। किशोर फैशन को अपने व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं, जिससे उन्हें अपने साथियों के बीच अपनी पहचान स्थापित करने में मदद मिलती है।

2. सोशल मीडिया का प्रभाव और वैश्विक फैशन ट्रेंड्स: सोशल मीडिया ने वैश्विक फैशन ट्रेंड्स को सीधे किशोरों के जीवन में प्रवेश कराया है। इन्फ्लुएंसर्स और सेलेब्रिटीज़ की स्टाइल का अनुसरण करने से किशोर वैश्विक फैशन के साथ जुड़ रहे हैं। हाड़ौती क्षेत्र के किशोर, जो पहले पारंपरिक पहनावे तक सीमित थे, अब फैशन ट्रेंड्स के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं। यह वैश्वीकरण का प्रत्यक्ष प्रभाव है, जिसने फैशन के प्रति किशोरों की सोच में गहरा परिवर्तन किया है।

3. पारंपरिक और आधुनिक पहनावे के बीच संघर्ष: पारंपरिक और आधुनिक पहनावे के बीच संघर्ष भी इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है। हालांकि किशोर आधुनिक फैशन की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन पारंपरिक परिधान अब भी विशेष अवसरों पर महत्वपूर्ण बने हुए हैं। यह इस बात को दर्शाता है कि किशोर आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बना रहे हैं। हालांकि, रोजमर्रा के जीवन में पारंपरिक पहनावे का स्थान कम होता जा रहा है।

4. शहरी और ग्रामीण अंतर: शहरी और ग्रामीण किशोरों के बीच फैशन के प्रति दृष्टिकोण में अंतर सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का परिणाम है। शहरी किशोरों में फैशन के प्रति अधिक जागरूकता और ब्रांडेड वस्त्रों के प्रति आकर्षण देखा गया, जबकि ग्रामीण किशोर अब भी साधारण और पारंपरिक परिधानों को प्राथमिकता दे रहे हैं। हालांकि, सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में भी फैशन ट्रेंड्स धीरे-धीरे बदल रहे हैं।

5. लिंग आधारित फैशन पहचान: फैशन और लिंग के बीच संबंध भी इस अध्ययन में स्पष्ट है। लड़कियां फैशन के प्रति अधिक सजग होती हैं और आधुनिक पहनावे को तेजी से अपनाती हैं। लड़कों में भी फैशन के प्रति जागरूकता है, लेकिन वे फैशन को अपनी पहचान के निर्माण के लिए उतना महत्वपूर्ण नहीं मानते जितना लड़कियां। यह दर्शाता है कि फैशन और लिंग की भूमिका किशोरों की पहचान निर्माण में महत्वपूर्ण होती है।

7. निष्कर्ष

हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में फैशन प्रवृत्तियों का अध्ययन यह दर्शाता है कि फैशन केवल पहनावे तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक पहचान,

सांस्कृतिक धरोहर, और आर्थिक स्थिति का भी प्रतीक है। आधुनिकता और वैश्विक फैशन ट्रेंड्स के प्रभाव से किशोरों की फैशन पसंद में बदलाव आया है, और अब वे पारंपरिक पहनावे की तुलना में आधुनिक और पश्चिमी परिधानों को प्राथमिकता दे रहे हैं। हालांकि, पारंपरिक पहनावा अब भी विशेष अवसरों पर अपनी महत्ता बनाए हुए है, और फैशन उद्योग के माध्यम से पारंपरिक और आधुनिक शैलियों का एक नया मिश्रण उभर कर आ रहा है। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि फैशन के माध्यम से किशोर न केवल अपनी पहचान बना रहे हैं, बल्कि समाज के साथ अपने संबंधों को भी फिर से परिभाषित कर रहे हैं।

इस अध्ययन के परिणाम यह स्पष्ट करते हैं कि हाड़ौती क्षेत्र के किशोरों में फैशन केवल व्यक्तिगत चयन नहीं है, बल्कि यह उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। वैश्वीकरण और सोशल मीडिया के प्रभाव ने फैशन को न केवल पहनावे तक सीमित रखा है, बल्कि इसे सामाजिक मान्यता और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का माध्यम बना दिया है। हालांकि, पारंपरिक पहनावे का महत्व अभी भी बना हुआ है, और किशोर विशेष अवसरों पर पारंपरिक परिधानों का चयन करते हैं।

अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि किशोर अब आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाने की कोशिश कर रहे हैं, और फैशन के माध्यम से अपनी पहचान और सामाजिक स्थिति को पुनर्परिभाषित कर रहे हैं।

संदर्भ:

[1] Goffman, E. **"The Presentation of Self in Everyday Life."** Anchor Books, 1959.
[2] Bourdieu, P. **"Distinction: A Social Critique of the Judgement of Taste."** Routledge, 1984.
[3] शर्मा, ए. **"भारतीय समाज में आधुनिकता और फैशन का प्रभाव."** भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 2010.
[4] गुप्ता, एस. **"भारतीय फैशन और पारंपरिक पहचान."** संस्कृति अध्ययन, 2015.
[5] सक्सेना, पी. **"किशोरावस्था में फैशन और सोशल मीडिया का प्रभाव."** मीडिया और समाज जर्नल, 2017.
[6] मिश्रा, आर. **"भारतीय परंपरागत पहनावा और सांस्कृतिक धरोहर."** भारतीय संस्कृति और धरोहर जर्नल, 2016.
[7] सिंह, आर. **"फैशन और किशोरों की सामाजिक पहचान."** सामाजिक अध्ययन जर्नल, 2018.